और अवधी जैसी सामान्य बोल - चाल की भाषाओं को मधुर साहित्यिक रूप देने का कार्य भक्ति काल ही कर सकता है। भक्ति काल में ही भाषा का व्यवस्थित रूप देखने को मिला है। इस प्रकार हिन्दी साहित्य के प्रथम तीन कालों में से भक्ति काल सभी दृष्टियों से अधिक समृद्ध होने के कारण स्वर्ण युग कहलाने का अधिकार है।

काव्य में भाव और कलापक्ष का पूर्ण संतुलन पाया जाता है।

भक्तिकाल की संगीतात्मकता हिन्दी साहित्य की अमर देन है। संगीत काव्य की रचना के लिए कवि में आत्म विश्वास की आवश्यकता होती है। संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश के कुछ कवियों में था आत्मविश्वास था। इसलिए भक्तिकाल में वह अपूर्व अपूर्व संगीत साहित्य दिया जो आज भी सुनने वाले को भाव से आप्ला-वित कर देता है, विभिन्न काव्य की दृष्टि से भक्ति काल सबसे अधिक समृद्ध है। इस काल में हिन्दी में प्रबंध काव्य मुक्तक काव्य, सूक्ती काव्य, संगीत काव्य, कथा काव्य, गीति नाट्य, गद्य रचनाएँ आदि सभी प्रकार के साहित्य का सिर्जन हुआ। इस काल के साहित्य में भारतीय संस्कृत का जैसा दर्शन पाया जाता है वैसा हिन्दी में अन्यत्र मिलना असंभव है। इस साहित्य में सगुण-निर्गुण भक्ति, हिन्दु मुस्लिम एकता, गृह दार्शनिकता और आध्यात्मिकता आदर्श जीवन समाज और राज्य का सम्पूर्ण चित्र आदि सभी बातें उपलब्ध है। (अपने समै प्रकार)

हित की भावना से युक्त काव्य को साहित्य कहाजाता है। इस दृष्टि से भक्तिकाल का साहित्य ही समाज को उन्नति का मार्ग दिखाने वाला प्रेरणा देने वाला और उद्धारक है भक्तिकाल का साहित्य सच्चे अर्थों में हित की भावना लिए हुए है। भाषा की दृष्टि से भी ब्रज

(गोस्वामी तुलसीदास को पाकर तो हिन्दी काव्य स्वयं ही गौरव का अनुभव करता है इस अमर कवि ने 'रामचरित मानस' के रूप में एक ऐसा अमर दीप प्रज्वलित कर दिया है जो [अनन्त काल] तक भारतीय साहित्य को प्रकाश देता रहेगा। मानस के रूप में एक आदर्श महाकाव्य देकर उन्होंने विनयपत्रिका और गीतावली के रूप में भावों की जो नदी बहाई है उसमें रसीक वर्ग गोता लगाते हुए कभी नहीं अघाता है।)

आने वाले समय

(सूरदास की वात्सल्य भक्ति और संगीत मनमोहक रागों का उद्भव भी इसी काल में हुआ है। जन्मान्ध होकर भी अन्तर दृष्टि से किसी अनुपम सौंदर्य का दर्शन कराने वाले इस भक्त कविने 'सूरसागर' के नाम से जिस अमृत सागर को प्रवाहित किया है, उसमें मात्री हृदय की ममता, बाल-चापल्य की भावुकता, शृंगार की सरसता, और विरह की आकुलता के साथ-साथ संगीत, साहित्य और भाव की त्रिवेणी त्रिवेणि मिलकर एक रस हो गई है।)

(इस प्रकार इस युग के चारों प्रधान कवि हिन्दी कवियों मे प्रथम पंक्ति के अधिकारी है और प्रत्येक में हिन्दी साहित्य को प्रकृत वस्तु प्रदान की है भक्तिकाल में जितने काव्य लिखे गए उन कवियों की वाणी स्वान्त सुखाय थी। भक्तिकाल का काव्य उद्देश्य पूर्ण है, हृदय हारी है और सत्य रूप में आनन्दप्रद है) भक्ति कालिन

9) भक्तिकाल हिन्दी साहित्य के इतिहास का स्वर्ण युग है — इस कथन की समीक्षा कीजिए।

Ans ⇒ हिन्दी साहित्य के इतिहास में संवत 1375 से संवत 1700 तक का काल भक्तिकाल के नाम से प्रसिद्ध है। इस युग में हिन्दी काव्य की सर्वोत्तमुखी उन्नति हुई। इस युग के अनेक प्रतिभाशाली कलाकार हिन्दी काव्य को अलंकृत करने के लिए अवतरित हुए और उन सब ने अपनी प्रतिभा का चमत्कार दिखाया। इस युग के प्रारम्भ में सबसे पहले हमें महात्मा कबीरदास के दर्शन होते हैं। इस सन्त कवि ने सीधी और साधी भाषा शैली में मानव जाति को जो अमर संदेश दिया है वह भारतीय साहित्य आकाश में उन्नत काल तक प्रतिध्वनित होता रहेगा। उन्होंने पारस्परिक वैर मनुष्य और पाखण्ड को दूर करके धर्म का पावन संदेश सुनाया तथा आत्मानुभूति के द्वारा प्रत्येक हृदय को स्पष्ट स्पर्श किया।

महाकवि मुहम्मद जायसी ने पद्मावत जैसा प्रेम प्रधान महाकाव्य लिखकर पारस्परिक वैर मनुष्य को दूर करके समता के आनन्द लोक में विचरन करने का मार्ग दिखाया। उन्होंने राजा रत्न सेन और रानी पद्मावती को तो अमर बना ही दिया, साथ ही साथ नागमती के विरह का ऐसा वर्णन किया कि जिसकी तुलना में विश्व का कोई भी वियोग वर्णन नहीं ठहर सकता। बारह मासा वर्णन तथा प्रकृति वर्णन में कवि ने अपने अद्भुत कुशलता दिखाई है।